B.ed 1st year
Paper- C 2
Unit- 3

✳ महात्मा गाँधी के हिन्द स्वराज ✳

हिन्द स्वराज :- हिन्द स्वराज गाँधीजी द्वारा रचित एक पुस्तक का नाम है। मूल रचना सन 1909 में गुजराती में थी। यह लगभग तीसहजार शब्दों की लघु पुस्तिका है जिसे गाँधी जी ने अपनी इंग्लैण्ड से दक्षिण अफ्रीका की यात्रा के समय पानी के जहाज में लिखी। यह इंडियन ओपिनियन में सबसे पहले प्रकाशित हुई जिसे भारत में अंग्रेजों ने यह कहते हुए प्रतिबन्धित कर दिया कि इसमें राजद्रोह - घोषित सामग्री है इस पर गाँधीजी ने इसका अंग्रेजी अनुवाद भी निकाला ताकि बताया जा सके कि इसकी सामग्री राजद्रोहात्मक नहीं है। हिन्द स्वराज का हिंदी और संस्कृत सहित कई भाषाओं में अनुवाद उपलब्ध है।

हिन्द स्वराज के बारे में गाँधी जी ने स्वयं कहा है कि " मेरी यह छोटी - सी किताब निर्दोष है कि बच्चों के हाथ में भी यह दी जा सकती है। यह किताब द्वेषधर्म की जगह प्रेमधर्म सिखाती है; हिंसा की जगह आत्म - बलिदान को स्थापित करती है और पशुबल के खिलाफ टक्कर के देशों में, यूरोप - अमेरिका में जो आधुनिक सभ्यता जोर कर रही है वह कल्याणकारी नहीं है।

मनुष्य हित के लिए यह सत्यनाशकारी है। गाँधीजी मानते थे कि भारत में और सारी दुनियाँ में प्राचीन काल से जो धर्म-परायण नीति-प्रधान सभ्यता चली आयी है, वही सच्ची सभ्यता है।

गाँधीजी का कहना था कि भारत में केवल अंग्रेजों को और उनके राज्य को हटाने से भारत को अपनी सच्ची सभ्यता का स्वराज नहीं मिलेगा। हम अंग्रेजों को हटा दें और उन्हीं के सभ्यता को और उन्हीं के आदर्श को स्वीकार करें तो हमारा उद्धार नहीं होगा। हमें अपनी आत्मा को बचाना चाहिए। भारत के पढ़े-लिखे सब लोग पश्चिम के मोह में फँस गए हैं। जो लोग पश्चिमी सभ्यता के आदर्श को स्वीकार नहीं किए हैं वे भारत की धर्मपरायण नैतिक सभ्यता को ही मानते हैं। उनको अगर आत्मशक्ति का उपयोग करने का तरीका सिखाया जाए, सत्याग्रह का रास्ता बताए जाए, तो वे पश्चिमी राज्य पद्धति का और उससे होनेवाले अन्याय का मुकाबला कर सकेंगे तथा हलचल के बिना भारत को स्वतंत्र करके दुनिया को भी बचा सकेंगे।

पश्चिम का शिक्षण और पश्चिम का विज्ञान अंग्रेजों के अधिकार के जोर पर हमारे देश में आए। उनकी रेलें, उनकी चिकित्सा और ग्रंथालय उनके न्यायालय आदि सब बातें अच्छी संस्कृति के लिए आवश्यक नहीं है बल्कि विघातक है - ये सारी बातें बिना संकोच के गाँधीजी ने इस किताब में दी है।

मूल किताब गुजराती में लिखी गई थी। उसके उनको हिन्दुस्तान आते ही बंबई सरकार ने उसे आक्षेपार्ह बताकर उसे जब्त किया। तब गाँधीजी ने सोचा कि 'हिन्द स्वराज' में मैंने जो कुछ भी लिखा है, वह

जैसा का वैसा अपने अंग्रेजी जानने वाले मित्रों ~~और~~ के सामने रखना चाहिए। उन्होंने स्वयं गुजराती 'हिन्द स्वराज' का अंग्रेजी अनुवाद किया और उसे छपाया। उसे भी बम्बई सरकार ने आक्षेपार्ह घोषित किया। तब उन्होंने बम्बई सरकार के हुक्म के खिलाफ 'हिन्द स्वराज' फिर छपवाकर प्रकाशित किया सरकार ने उसका विरोध नहीं किया। तब से यह किताब बम्बई सरकार के राज्य में, सारे भारत में और दुनिया के गंभीर विचारकों के बीच ध्यान से पढ़ी जाती है।

'हिन्द स्वराज' की प्रस्तावना में गाँधीजी ने स्वयं लिखा है कि व्यक्तिगत उनका सारा प्रयत्न 'हिन्द स्वराज' में बताए हुए आध्यात्मिक स्वराज्य की स्थापना करने के लिए है। विविध उन्होंने भारत में अनेक साथियों की मदद में स्वराज का जो आन्दोलन चलाया, कांग्रेस के जैसी राजनीतिक राष्ट्रीय संस्था का मार्गदर्शन किया, स्वराज के लिए अन्याय का शोषण और परदेशी सरकार का विरोध करने में अहिंसा का सहारा लिया जाए, इतना एक ही आग्रह उन्होंने रखा है। इसलिए भारत की स्वराज्य-प्रकृति का अर्थ उनकी इस वामनमूर्ति पुस्तक 'हिन्द स्वराज' से न किया जाए।